नया मानव

तृष्णा बसाक

ब्लॉक टू के शीशे की इमारत की उन्नीसवीं मंज़िल पर वे गुमसुम-से बैठे थे। वे, मतलब अरा और रेमो। यह मंज़िल काँच के अण्डे के आकार की इस इमारत के बीचों-बीच से कुछ नीचे थी। दीवार में ही इन-बिल्ट बैठने की व्यवस्था थी। ठीक बीच में जनकल्याण सेवा अधिकारी का दफ्तर था। साउंड सिस्टम पर मद्धिम आवाज़ में सरोद बज रहा था। स्वचालित कॉफी एण्ड स्नैक्स के वेंडर से, मन चाहे तो कुछ खा भी सकते थे। इस समय बाहर सांझ उतर रही थी। आकाश की छाती पर यह कल्याण-भवन बादल जैसा हवा में तैर रहा था। फिर भी कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। मन उदास हो तो कलाई पर बँधी छोटी-सी घड़ी की नीली स्विच दबा दो, बस। लेकिन उन दोनों को वो भी करने की इच्छा नहीं हो रही थी। उन जैसे और भी छः दम्पति माथे पर चिन्ता की लकीरें लिए इन्तज़ार कर रहे थे। मतलब उनके भी माता या पिता, सास या ससुर... 'अरा, रेमो, ब्लॉक नाइन, सेक्टर थ्री' पियानो जैसी सुरीली आवाज़ ध्वनित होती है। टेंशन के कारण रेमो अभी तक बैठ

नहीं पा रहा था। उसने फँसी-फँसी आवाज़ में अरा से पूछा, "माँ का कोड याद है न?" अरा ने गर्दन हिलाकर इशारे से 'हाँ' कहा।

कमरे के अन्दर पहुँचते ही एक छरहरी-सी लड़की ने आगे बढ़कर हाथ बढ़ा दिया। "अरा और रेमो हैं न? मैं युहाना, क्या लेंगे कहिए?" युहाना के पीछे की दीवार से समुन्दर झाँक रहा था। अरा को उस तरफ निहारते देखकर युहाना बोली, "समुन्दर मुझे पसन्द है, बदल दूँ?"

"नहीं, ठीक है।"

"क्यों, रेमो को तो जंगल प्रिय है और तुमको पहाड़।"

युहाना के अँगुली से इशारा करते ही दाहिनी तरफ की दीवार घने जंगल और बाएँ तरफ की दीवार पहाड़ में तबदील हो गई।

"ये सब बॉडी लैंग्वेज ऐक्टिवेटेड हैं, है न?"

युहाना ने मुस्कुराते हुए कहा, "बिलकुल ठीक। चलो, अब तुम लोगों की बात सुनी जाए।" एक छोटी-सी सेन्टर टेबल को घेरे तीन सोफे लगे थे। टेबल पर धुँआ उगलती कॉफी और चिकन पकौड़े रखे थे। वे चाहते तो होम वेब के ज़रिए भी युहाना के साथ वार्तालाप कर सकते थे। दरअसल, किसी ज़माने में इस दुनिया में नेट और विज़ुअल मीडिया की वजह से ऐड्स (अटेनशन डेफिसिट डिसआर्डर सिनड्रोम) नाम की एक खतरनाक बीमारी सब ओर तेज़ी-से फैल गई थी, जिस वजह से एकदम अकेले रहना पसन्द होना, मोटापा वगैरह समस्याओं ने विकराल रूप धारण कर लिया था। अब तो लोग बिना ज़रूरत के नेट का उपयोग करते ही नहीं थे। सरकार भी लोगों के बीच मेल-जोल पर ज़ोर दे रही थी। अरा के नानाजी भी इसी ऐड्स रोग के शिकार हुए थे।

"इस 14 सितम्बर को तो रोमानी साठ साल की हो जाएँगी?"

"हाँ।" अरा और रेमो एकसाथ बोल पड़े। रेमो का स्वर थोड़ा काँप गया क्या? यद्यपि वे बचपन से ही इस सरकारी नियम से वाकिफ हैं। फिर भी, कुछ भी हो, माँ हैं न!

"तुम दोनों तैयार तो हो न? वरना अभी भी छः महीने से ज़्यादा समय है, हमारा स्पेशल ऐडप्शन का दो महीने का कोर्स कर सकते हो, हफ्ते में तीन दिन।"

रेमो ने कहा, "अच्छा, कभी-कभी तो एक्सटेंशन भी होता है?"

"डोन्ट बी इमोशनल रेमो। पता है न, हज़ारों वर्ष पहले इसी देश में वानप्रस्थ जैसी प्रथा थी। हमारी 'पारापार' भी वैसी ही एक प्रथा कह सकते हो। सोचो ज़रा, दो-तीन सौ साल पहले पृथ्वी पर वृद्धाश्रम जैसी निष्ठुर परम्पराएँ हुआ करती थीं। उसकी अपेक्षा पारापार तो सौ गुना अच्छा है। और, यू नो, हमने जो भी

किया है, वह तो हमारी आने वाली पीढ़ी के बारे में कुछ सोचकर ही किया है। उनके लिए जगह बनाई जाए, इसके लिए ही तो पुरानी पीढ़ी को हट जाना होगा। एक दिन हम भी इसी तरह...।"

अरा युहाना की बात पूरी होने से पहले ही असहिष्णु स्वर में बोल पड़ी, "समस्या तो इसी अगली पीढ़ी के लिए ही है। चिंकारा अपनी दादी के लिए इतनी ऑब्सेस्ड है कि रोमानी के जाने के बाद शायद हम उसे ज़िन्दा भी न रख पाएँ।" अरा का स्वर रुँध गया। रेमो हौले-से अरा के हाथ पर दबाव डालते हुए बोला, "सच में युहाना, चिंकारा के बारे में सोच-सोचकर हमारी तो रातों की नींद ही उड़ गई है। हमारी बच्ची इतनी छोटी है, अभी पाँच की भी नहीं है। और बारह वर्ष के पहले तो कोई ऐडप्शन कोर्स भी नहीं करा सकते।"

युहाना की आँखों की चमकती रोशनी भी बुझ-सी गई। "लेकिन हम मजबूर हैं रेमो। तुमको तो पता ही है, हम केवल विशिष्ट नागरिकों को ही एक्सटेंशन दे सकते हैं। जैसे कि, साहित्यकार, वैज्ञानिक, वह भी ज्यूरीबोर्ड यदि अनुमति देती है, तभी। वैसे, आई मस्ट एडमिट, अभी तक हम भ्रष्टाचार को देश से निकाल बाहर नहीं कर पाए हैं। इसलिए सत्ताधारी पार्टी की छत्रछाया में रहने वाले गैरकानूनी ढंग से बहुत सारे फायदे ले रहे हैं। वैसे सच में मेरे हाथ में कुछ भी नहीं है। फिर डेटा दिखा रहा है कि रोमानी की कोई खास सामाजिक देन नहीं है।"

रेमो के दिमाग में एक के बाद एक

तस्वीरें घूम जाती हैं। छुट्टी के बाद स्कूल के फाटक के सामने खड़ी माँ, बुखार के वक्त सिरहाने पर बैठी माँ, हवाई जहाज़ दुर्घटना में पिताजी की मौत के बाद अरित्र चाचा का दिया शादी का प्रस्ताव ठुकराने वाली माँ, चिंकारा को लेकर बाग से घर लौटने वाली माँ, और इधर डेटा दिखा रहा है कि रोमानी की कोई खास सामाजिक देन नहीं है।

"एक्सट्रीमली सॉरी, तुम दोनों को चिंकारा को समझाना होगा। हर बच्चे को तालमेल बिठाना ही पड़ता है।"

अरा कहने वाली थी, "लेकिन वो तो..." लेकिन रेमो ने उसकी बात पूरी हो, इसके पहले ही कहा, "ठीक है, चलो, चलते हैं।"

फिर अरा का हाथ पकड़कर झट-से उसे कमरे से बाहर खींच लाया। एक भयानक आवेश उसके दिमाग को कचोट रहा था।

* * *

थोड़ी देर पहले ही अरा दफ्तर से वापस लौटी थी। नहा-धोकर बैठकखाने में सोफे पर बैठकर एक मैगज़ीन के पन्ने पलट रही थी। सुना है कि उसकी दादी ने बचपन में कोई किताब ही नहीं पढ़ी। उन दिनों लोगों पर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की इतनी खुमारी चढ़ी थी कि किताबें छपनी ही लगभग बन्द हो गई थीं। वैसे आजकल ढेरों पत्र-पत्रिकाएँ छप रही हैं। लेकिन नई कहानी या कविताएँ लोग आजकल लिखते ही नहीं। सभी पत्रिकाएँ रीप्रिन्ट करके ही अपने पन्ने भरा करती हैं। अरा अनमनी-सी पन्ने पलट रही थी। एकाएक उसकी दृष्टि एक फीचर पर अटक गई। लगभग दो सौ साल पुराने किसी लेख का पुनर्मुद्रण। इन्सान का क्लोन बनना चाहिए या नहीं, लेख इसी पर था। "क्या बेवकूफों जैसा लिखा है!" उसने पत्रिका रख दी। किसी दौर में ह्यूमन क्लोनिंग इतनी अन्धाधुन्ध हो रही थी कि ढेरों समस्याएँ उठ खड़ी हुई थीं। इसीलिए पिछली सदी में एक सख्त कानून बनाकर ह्यूमन क्लोनिंग पर पाबन्दी लगा दी गई।

रेमो को आज लौटने में रात होगी। खिड़की से बाहर देखकर अरा थोड़ी चकित रह गई। बारिश हो रही थी। अगस्त के महीने में बारिश तो हो ही सकती है। लेकिन क्या उन लोगों का वेदर रिपोर्ट गेजेट काम नहीं कर रहा है? नहीं, केवल उनके लॉन में नहीं, पूरे ब्लॉक में ही बारिश हो रही है। लाल रंग का सिक्योरिटी चेक पोस्ट, पिच, मेपल के पेड़, सभी भीग रहे हैं। ब्लॉक में सभी के गेजेट बिगड़ गए क्या? ओ हो, आज तो शनिवार है। देश में कवियों की संख्या में भारी गिरावट आने के कारण दो साल पहले, प्रधान सांस्कृतिक सलाहकार ने एक रेन बिल पास करवाया था। महीने में चार दिन बारिश झेलना ही है। कहते हैं कि बारिश की रिमझिम से कविता लिखने की अकुलाहट

जाग उठती है। पता नहीं बाबा, दिन भर बारिश को तकने के बाद भी अरा से तो एक शब्द भी लिखा नहीं जाएगा। दरअसल, अरा एक भी अक्षर नहीं लिख सकती क्योंकि उसे पूरी ट्रेनिंग वर्बल और पिक्टोरियल कम्युनिकेशन के ज़रिए दी गई है।

उसके बाग में एक बड़ा-सा पेड़ है, सेमल का। उसके नीचे सफेद बेंच पर बैठकर बारिश में भीगते हुए चिंकारा रोमानी से सटकर कहानी सुन रही है। अरा डर के मारे सिहर-सी गई। चिंकारा को तो कोई बीमारी नहीं होगी। लेकिन रोमानी? और बस एक महीने बाद ही उनको पारापार भेजना होगा। ऐन वक्त पर अगर वह बीमार पड़ गईं तो? मानवाधिकार कमिशन के लोग और पत्रकार डण्डा लेकर दौड़े आएँगे। अरा के दफ्तर में एक बड़ी लिफ्ट की बात चल रही है, सब रद्द हो जाएगा। और यदि उन लोगों को पता चल गया कि चिंकारा के लिए बारिश में भीगने से रोमानी बीमार पड़ी हैं, तब क्या कुछ हो सकता है, यह सोचकर ही अरा सिहर गई। हाँलाकि, किसी को कुछ पता नहीं है, फिर भी अरा और रेमो हमेशा डर से काठ बने रहते हैं।

इन्सान इतना आगे बढ़ चुका है, फिर भी दिल से इतना प्रिमिटिव - किसी भी हाल में नहीं स्वीकार कर पा रहा है। रेमो ने प्यार से बेटी का नाम रखा है चिंकारा, सचमुच वह

हिरणी की तरह फुदकती रहती है। उसकी आँखों में झाँकते ही अरा अपने सारे दुःख भूल जाती है।

"उदास होने पर उसकी आँखों में देखिएगा।" जयव्रत ने कहा था। उस समय आँख-वाँख नहीं, अरा किसी और बात को लेकर टेंशन में थी। "उसकी बुद्धि का लेवेल थोड़ा कम, मतलब हमारी तरह रखा है न? वरना हम मुश्किल में पड़ जाएँगे।"

"डोण्ट वरी, उन लोगों की अपेक्षा वह कुछ ज़्यादा ही भावुक और कम बुद्धिवाली है।"

अरा ने खिड़की से पुकारा, "तुम दोनों वहाँ क्या कर रहे हो? अन्दर आओ।"

रोमानी का हाथ पकड़कर चिंकारा अन्दर आ रही है। उसे देखकर अरा हैरान हो जाती है। क्या यह भी सम्भव है? चिंकारा का इतना लगाव! यदि सबको पता चल जाए कि चिंकारा इतनी संवेदनशील है, तो शायद वह इतना बड़ा मुद्दा बन जाएगा कि सरकार ही गिर जाएगी। इन्सान का अन्तिम गर्व भी छीना जा रहा है, इस बात को लेकर विरोधी पार्टियाँ हो-हल्ला मचा देंगी। सुना है, पहले के ज़माने में सफेद चमड़ीवाले काले लोगों के साथ बुरा बर्ताव करते थे। अब तो आमने-सामने दो ही श्रेणी खड़ी हैं, मानव और मशीन-मानव।

रोमानी अपने और चिंकारा के

भीगे कपड़े बदलकर कमरे में आईं। देखकर पता नहीं चलता कि उनके पास अब सिर्फ एक महीने की मियाद रह गई है। पारापार से कोई लौटकर नहीं आता। एक दिन अरा और रेमो को भी वहाँ जाना होगा। अच्छा चिंकारा... फिर से सिर से पाँव तक एक सर्द झुरझुरी-सी उठी। और तभी 'माँ' कहती हुई चिंकारा उसकी गोद में कूद पड़ी। "पापा को लौटने में रात होगी क्या?"

"हाँ बेटी, लेकिन तुम उतनी देर तक नहीं जगना। थोड़ी देर बाद तुमको खाना खिलाकर सुला दूँगी।"

"नहीं, मुझे दादी खिलाएँगी।"

"दादी की तबियत ठीक नहीं है, सोना।"

"इश्श, नहीं।"

अरा ने लाचार नज़रों से रोमानी की ओर देखा। उनकी आँखें इस साँझ के आकाश जैसी सिक्त (भीगी हुई) हैं। सारी दुनिया में सिर्फ चार लोगों को पता है - अरा, रेमो, रोमानी और जयव्रत। रोमानी चिंकारा को धीरे-धीरे खिलौनेवाले कमरे में ले गईं। तभी फोन की घण्टी बजी। "ज़रूर रेमो का फोन होगा, क्या लौटने में और देर होगी? हैलो।"

"मैं युहाना, अरा बोल रही हो न?"

अरा ने कुछ अनिश्चित-से स्वर में कहा, "हाँ, लेकिन बात क्या है?"

अचानक से उसे इस फोन का मतलब समझ में नहीं आया। जब कुछ और हो ही नहीं सकता...

"कल एक बार आ सकोगी, यही शाम के चार बजे के करीब?"

दर्द और तनाव से दिमाग उलझ-सा गया है। उसने बड़ी मुश्किल से कहा, "ठीक है।"

* * *

वही कमरा, वही कॉफी और पकौड़े, दीवार पर नीला समन्दर, युहाना के चेहरे पर वैसी ही मुस्कुराहट, कुछ महीने पहले की एक शाम को भी ऐसी ही मुस्कुराहट थी।

"बैठो, दरअसल तुम्हारे जैसे और कई केस हमारे पास आए हैं। शायद इस पर बहुत जल्द ही उच्च स्तरीय बैठक होगी। लेकिन ये सब तो एक-दो दिन का मामला नहीं है। कई साल भी लग सकते हैं।"

अरा और रेमो ने एक-दूसरे की ओर देखा। जब कुछ कर ही नहीं सकते तो इस तरह बुलाने का क्या तुक है! युहाना उनकी मनोदशा को भाँपकर बोली, "मैंने एक दूसरा उपाय सोचा है।"

"एक्सटेंशन?" रेमो की आँखों में आशा की किरण झाँक उठी।

"ऊँहूँ, रिप्लेसमेन्ट।"

"रिप्लेसमेन्ट!"

"हाँ, हूबहू रोमानी जैसा एक ह्यूमनॉइड बना देना। तुम्हारी बेटी पकड़ ही नहीं पाएगी कि जिससे वह

दादी समझकर लिपट रही है, वह उसकी हाड़-मांस की दादी नहीं, बल्कि एक ह्यूमनॉइड है।"

"नहीं-नहीं," रेमो के स्वर में कराह थी। "चिंकारा पक्का पकड़ लेगी।"

युहाना की सिकुड़ी भौंहे देखकर अरा जल्दी-से बोल पड़ी, "असल में चिंकारा बहुत संवेदनशील है। वो फैन्सी ड्रेसवाली पार्टी का वाकया याद है? तुम कैसी अजीब ड्रेस में आई थीं, लेकिन चिंकारा ने पहचान लिया था।"

"नहीं-नहीं, असम्भव। तुम्हारी बेटी चाहे कितनी ही तेज़ क्यों न हो, इन्सान और ह्यूमनॉइड के बीच के फर्क को पकड़ना उसके लिए नामुमकिन है। जब बड़े ही पकड़ नहीं सकते। वरना क्या संविधान में विशेष संशोधन करके ह्यूमनॉइड्स को सारे नागरिक अधिकार दिए जाते? सोचो तो ज़रा।"

"हमारी बेटी के लिए सब कुछ मुमकिन है, युहाना। क्योंकि वह खुद एक ह्यूमनॉइड है। अरा में कुछ समस्याएँ रहने के कारण चार साल सात महीने पहले हम उसे एक वैज्ञानिक मित्र की लैब से ले आए थे।"

रेमो कहीं पागल तो नहीं हो गया? अरा के सामने पूरी दुनिया जैसे डोल उठी। दीवार की लहरें ऑक्टोपस की सूँड जैसी जान पड़ रही थीं।

"ह्यूमनॉइड?" नफरत से युहाना का सुन्दर चेहरा सिकुड़ गया।

"तुम दोनों को पता है न कि हमने ह्यूमनॉइड अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए बनाए हैं, उनके साथ सामाजिक बन्धन जोड़ने के लिए नहीं।"

"नहीं युहाना, हमने ह्यूमनॉइड बनाए हैं, इस दुनिया को रहने योग्य बनाने के लिए। इन्सान जिस तरह किसी ज़माने में समस्त इन्सानियत खो चुका था, उस तबाही के हाथ से बचने के लिए ही मानव की सभी अच्छाइयों को छाँटकर ह्यूमनॉइड तैयार किया गया है।" रेमो ने एक ही साँस में इतना कुछ कह डाला।

"कूल डाउन रेमो," युहाना की वही मुस्कुराहट फिर से लौट आई थी, "लेकिन इसके कंसक्वेन्स के बारे में सोचा है तुम लोगों ने? अगर बात खुल गई तो..."

"कौन खोलेगा?"

"क्यूँ, मैं? अगर तुम दोनों मेरी एक शर्त पर राज़ी नहीं हुए तो।"

"कैसी शर्त?"

"मेरे भाई की ह्यूमनॉइड की एक फैक्टरी है। वहाँ से तुमको रोमानी का एक ह्यूमनॉइड खरीदना होगा। फॉर्टी फाइव करोड़ कैशडाउन।"

रेमो ने सर्द लहज़े में कहा, "और तुम कितना लोगी?"

"थोड़ा ज़्यादा आएगा, कइयों को मैनेज करना है।" "सुनो युहाना, मैं चाहूँ तो माँ की उम्र, चिंकारा की

खुशी तुमसे खरीद सकता हूँ, लेकिन खरीदूँगा नहीं। मेरी छोटी-सी दुनिया को मैं चकनाचूर कर दूँगा, लेकिन तुमसे कभी नहीं खरीदूँगा।"

"यह तुम्हारा मामला है रेमो, मुझे अपना काम करना है।"

रेमो उत्तेजित होकर कुछ और कहने जा रहा था, परन्तु अरा उसकी बाँह पकड़कर बाहर खींच लाई। नीचे आकर दोनों ने उस इमारत की ओर देखा। आसमान में बादलों की तरह वह 'कल्याणभवन' तैर रहा था। सूरज डूबने को था। इसीलिए बादलों पर खून के छींटे बिखरे थे।

"अच्छा, अगर हम चिंकारा को उनके चंगुल से छुड़ा भी लें, तो क्या एक दिन वह भी युहाना जैसी बन जाएगी? खून-मांस से न बनी सही, है तो हमारी ही आत्मजा, इन्सान के हाथों से बनी।"

रेमो खामोश ही रहा।

तृष्णा बसाक: सन् 1970 में कोलकाता में जन्म। आधुनिक बंगाली साहित्य की एक उल्लेखनीय कवयित्री, कहानीकार, उपन्यासकार और निबन्धकार हैं। जादवपुर विश्वविद्यालय से बी.ई. और एम.टेक. करने के बाद, तृष्णा ने साहित्य के प्रति अपने जुनून को आगे बढ़ाने के लिए अपनी पढ़ाई पर आधारित स्वाभाविक करियर छोड़ दिया। साहित्य अकादमी के साथ उनके 5 साल के कार्यकाल ने उन्हें भारतीय साहित्य के साथ निकट सम्पर्क में आने का मौका दिया। वर्तमान में, वे एक पूर्णकालिक लेखिका, सम्पादक और अनुवादक हैं। वे कोलकाता ट्रांसलेटर्स फोरम की सचिव भी हैं। कविताओं, लघु कथाओं, उपन्यासों, निबन्धों और अनुवादित कार्यों की लगभग 50 पुस्तकें प्रकाशित। कई प्रतिष्ठित अनुदानों और पुरस्कारों से सम्मानित। तृष्णा को जटिल विषयों के साथ प्रयोग करना पसन्द है। कोलकाता में रहती हैं।

बांग्ला से अनुवाद: लिपिका साहा: सन् 1965 में कोलकाता में जन्मी प्रसिद्ध अनुवादक जो हिन्दी और बांग्ला साहित्य के क्षेत्र में अपने विस्तृत अनुवाद कार्य के लिए जानी जाती हैं। आपके पास उपन्यास, कविता, लघु कथाएँ, और नाटक को बांग्ला से हिन्दी और हिन्दी से बांग्ला में व्याख्या करने का उत्कृष्ट कौशल है। आप भारतीय ज्ञानपीठ, भारतीय भाषा परिषद, राजस्थान पत्रिका, दिल्ली प्रेस और कई अन्य प्रसिद्ध संस्थानों से जुड़ी रहीं। अनुवाद कार्य के क्षेत्र में योगदान के लिए आपको सुभद्रा कुमारी चौहान पुरस्कार 2020 से सम्मानित किया गया।

सभी चित्र: गायत्री: प्रकृति और पक्षी प्रेमी हैं। यात्रा करना और आउटडोर स्केचिंग उनका पसन्दीदा शगल है। उन्होंने एनीमेशन फिल्म डिज़ाइन में स्नातक किया है और ज़्यादा-से-ज़्यादा चित्रकारी करने की कोशिश करती हैं। ठाणे, महाराष्ट्र में रहती हैं।